ASTRO ARPITA NATH

वैदिक ज्योतिष में उपग्रह

Arpita Nath द्वारा · समय एवं फलित · 2026-09-17

मानक वैदिक कुंडली विश्लेषण में, ज्योतिषी मुख्य रूप से नौ भौतिक या प्राथमिक पिंडों - नवग्रहों (सूर्य से केतु तक) को देखते हैं। हालाँकि, वृहत् पराशर होरा शास्त्र (BPHS) जैसे शास्त्रीय ग्रंथ अप्रकाशित, संवेदनशील गणना बिंदुओं की एक माध्यमिक परत का वर्णन करते हैं जिन्हें उपग्रह (गौण ग्रह या छाया बिंदु) के रूप में जाना जाता है।

उप का अर्थ है "माध्यमिक," "अधीनस्थ," या "समीप।" यद्यपि उपग्रहों का कोई भौतिक द्रव्यमान नहीं होता है, फिर भी वे संवेदनशील ऊर्जावान प्रेरकों के रूप में कार्य करते हैं। वे ब्रह्मांडीय लिटमस परीक्षण के रूप में कार्य करते हैं, जो छिपी हुई कमजोरियों, अव्यक्त कार्मिक ऋणों, अचानक होने वाली घटनाओं और मनोवैज्ञानिक अंध बिंदुओं को उजागर करते हैं जिन्हें केवल प्राथमिक ग्रहों की स्थितियां प्रकट नहीं कर सकती हैं।

उपग्रहों के दो अलग-अलग वर्ग

शास्त्रीय ज्योतिष उपग्रहों को दो गणितीय श्रेणियों में विभाजित करता है:

1. कालवेला (समय-आधारित भाग): दिन और रात को ग्रहों के स्वामियों द्वारा शासित आठ समान भागों (पहरों) में विभाजित करके गणना की जाती है।

2. अप्रकाश ग्रह (प्रकाशहीन सौर बिंदु): सूर्य के सटीक देशांतर अंश (डिग्री) में निश्चित गणितीय चाप जोड़कर गणना की जाती है।

भाग 1: कालवेला (समय-आधारित उपग्रह)

पाँच प्राथमिक कालवेलाओं को विशिष्ट मुख्य ग्रहों की सूक्ष्म, अप्रकाशित "संतान" या छाया विस्तार माना जाता है:

1. गुलिक (शनि की संतान)
• **प्रकृति**: पापी, भारी, प्रतिबंधात्मक।
• **मुख्य प्रभाव**: फलित ज्योतिष में, विशेष रूप से दक्षिण भारतीय और पाराशरी परंपराओं में, गुलिक सबसे प्रमुख उपग्रह माना जाता है। यह संचित कर्मों के ऋण, विलंब, दीर्घकालिक बीमारियों और सूक्ष्म विषाक्तता (विष) को दर्शाता है।
• **स्थिति की गतिशीलता**: केंद्र या त्रिकोण भावों में प्रतिकूल, लेकिन उपचय भावों (तीसरे, छठे और ग्यारहवें) में असाधारण रूप से अनुकूल होता है, जहाँ यह प्रचंड प्रतिस्पर्धी सहनशक्ति, दृढ़ता और शत्रुओं पर विजय प्रदान करता है।

2. मांदि (शनि की वैकल्पिक छाया)
• **प्रकृति**: गुलिक से निकटता से जुड़ा हुआ, इसे अक्सर इसका समरूप बिंदु या प्रवेश का सटीक क्षण माना जाता है।
• **मुख्य प्रभाव**: यद्यपि कुछ परंपराएँ शनि के ग्रहीय भाग के आरंभ या मध्य के आधार पर मांदि की गणना थोड़े अलग तरीके से करती हैं, इसके प्रभाव गुलिक के समान ही होते हैं - जो शारीरिक सुस्ती, संरचनात्मक रुकावटों और अचानक मनोवैज्ञानिक झिझक को नियंत्रित करते हैं।

3. यमघण्टक (गुरु की संतान)
• **प्रकृति**: शुभ, कल्याणकारी, रक्षात्मक।
• **मुख्य प्रभाव**: यम (धर्म और मृत्यु के देवता) के नाम पर आधारित, यह बिंदु असमय होने वाली हानि का मुकाबला करता है। यह जहाँ बैठता है, वहाँ दैवीय कृपा, उच्च शिक्षा और गंभीर स्वास्थ्य या वित्तीय संकटों के दौरान समय पर सुरक्षा का एक शांत आधार प्रदान करता है।

4. अर्धप्रहर (बुध की संतान)
• **प्रकृति**: मिश्रित से शुभ।
• **मुख्य प्रभाव**: मानसिक चपलता, वाणिज्य, संचार स्पष्टता और रणनीतिक समस्या-समाधान को नियंत्रित करता है। एक सुव्यवस्थित अर्धप्रहर सुचारु व्यापार और तीव्र विश्लेषणात्मक समझ का समर्थन करता है।

5. काल (सूर्य की संतान)
• **प्रकृति**: सौम्य पापी, आधिकारिक, परिवर्तनकारी।
• **मुख्य प्रभाव**: समय (काल) के निरंतर दबाव का प्रतिनिधित्व करता है। जब यह दशा या गोचर द्वारा सक्रिय होता है, तो यह अहंकार की अचानक परीक्षा, प्रशासनिक मतभेद या नैतिक अखंडता की मांग करने वाले निर्णायक करियर परिवर्तनों को लाता है।

भाग 2: अप्रकाश ग्रह (सूर्य से व्युत्पन्न अप्रत्यक्ष छाया बिंदु)

ये पाँच गणितीय बिंदु सीधे सूर्य (Surya) की स्थिति से गिने जाते हैं, जो सौर ऊर्जा के ताप, कार्मिक रूपांतरण और आध्यात्मिक जागृति के दर्पण के रूप में कार्य करते हैं:

1. धूम (धुआँयुक्त बिंदु)
• **गणना**: सूर्य का देशांतर + 133° 20'
• **प्रकृति**: अग्नितत्व, अस्पष्ट, अशांत।
• **मुख्य प्रभाव**: धूम उस दमघोंटू धुएं का प्रतीक है जो स्पष्ट दृष्टि को रोकता है। यह मानसिक बेचैनी, करियर के विकल्पों में भ्रम, तीखी बहस और परिस्थितियों को निष्पक्ष रूप से देखने में कठिनाई उत्पन्न करता है।

2. व्यतिपात (महान पतन)
• **गणना**: 360° - धूम
• **प्रकृति**: अस्थिर, विघटनकारी।
• **मुख्य प्रभाव**: भाग्य में अचानक उलटफेर, पद या अधिकार से अनपेक्षित गिरावट और संरचनात्मक उथल-पुथल को दर्शाता है। जब यह व्यक्तिगत भावों को पीड़ित करता है, तो यह अत्यधिक आत्मविश्वास और जोखिम भरे वित्तीय सट्टेबाजी से सावधान करता है।

3. परिवेष (परिवेश / घेरा)
• **गणना**: व्यतिपात + 180°
• **प्रकृति**: प्रतिबंधात्मक, अंतर्मुखी।
• **मुख्य प्रभाव**: परिवेष एक घेराबंदी या सौर प्रभामंडल (हेलो) की तरह कार्य करता है जो ऊर्जा को सीमित करता है। यह बंधन की भावना, पारिवारिक दायित्वों या भावनात्मक अवरोध का संकेत दे सकता है, लेकिन एकांत साधना और गूढ़ रहस्यों के अध्ययन में सहायता करता है।

4. इंद्र चाप (इंद्रधनुष / कोदंड)
• **गणना**: 360° - परिवेष
• **प्रकृति**: भ्रामक, मायावी।
• **मुख्य प्रभाव:** एक आकर्षक इंद्रधनुष का प्रतिनिधित्व करता है - जो विशाल भौतिक लाभ का वादा करता है लेकिन अंततः क्षणभंगुर साबित हो सकता है। यह सौंदर्य संबंधी इच्छाओं, अचानक सार्वजनिक पहचान या व्यावसायिक अवसरों को नियंत्रित करता है जिनकी सावधानीपूर्वक जांच आवश्यक होती है।

5. उपकेतु (द्वितीयक पुच्छ)
• **गणना**: इंद्र चाप + 16° 40' (जो सूर्य से ठीक 30° पीछे आता है)
• **प्रकृति**: विरक्त, आकस्मिक, आध्यात्मिकता देने वाला।
• **मुख्य प्रभाव**: यह वास्तविक छाया ग्रह केतु की तरह ही व्यवहार करता है। यह अप्रत्याशित अंत, करियर से अचानक अलगाव, गूढ़ विद्याओं में रुचि और भौतिक निर्भरताओं से मुक्ति लाता है।

व्यवहार में उपग्रहों को कैसे देखें

• **प्रमुख प्रकाशवान ग्रहों (सूर्य-चंद्र) के साथ युति:** जब कोई उपग्रह 3° से 5° के भीतर सूर्य या चंद्रमा के साथ युति बनाता है, तो वह जातक की शारीरिक जीवन शक्ति (सूर्य) या मानसिक स्थिरता (चंद्रमा) को अपने विशिष्ट प्रभाव से प्रभावित करता है।

• **भावों की संवेदनशीलता:** किसी अशुभ उपग्रह (जैसे धूम या गुलिक) से युक्त पीड़ित भाव अक्सर यह दर्शाता है कि मुख्य राशि स्वामियों के मजबूत होने के बावजूद जातक को जीवन के किस क्षेत्र में बार-बार, अकथनीय देरी या "दुर्भाग्य" का सामना करना पड़ता है।

• **गोचर के प्रभाव:** आपकी जन्म कुंडली के उपग्रहों के सटीक अंशों पर प्रमुख बाहरी ग्रहों (शनि, गुरु, राहु) का गोचर अक्सर जीवन में अचानक बदलाव या अचानक फल प्रदान करता है।

---

https://astroarpitanath.com/hindi/upagrahas-in-vedic-astrology/
ज्योतिष केवल मार्गदर्शन के लिए प्रदान किया जाता है। जीवन के महत्वपूर्ण निर्णयों के लिए, कृपया किसी योग्य पेशेवर से परामर्श लें।